Page No. Date

कला वाणिज्य महाविद्यालय वडूज

बिषय -: कौसल्या बैसंत्री लिखित दोहरा अभिशाप आत्मकथा का मूल्यांकन

नाम :- सद्दे अश्विनी अजित

रोल नं :- 450 Ty B.A

मागदर्शक -: प्रा. बी. टी. साबळे सर

Year - 2019-20

Scanned with CamScanner

Page No.: Date :

प्रस्तावना

'दोहरा अभिशाप' यह कौसल्या बैसंत्री का आत्मकथात्मक उपन्यास है। लेकिन कई अन्य बातों में यह आम दलित साहित्य के उपन्यासों से भिन्न है। यह उपन्यास लेखिका के लंबे संघर्षपूर्ण कड़वे - मीठे अनुभवों से भरे जीवन के एक सिंहावलोकन के रूप में लिखा गया है। इस उपन्यास में दलित जीवन का एक सम्यक और सर्वांगपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है। इसकी कथावस्तु २४ प्रकरणों में लिखी गई है। इसकी कथावस्तु संक्षेप में इस प्रकार है।

'दोहरा अभिशाप' इस आत्मकथात्मक उपन्यास कौसल्या बैसंत्री नामक पात्र के बारे में लेखिकाने इस उपन्यास में लिखा है। कौसल्या बैसंत्री के जीवन के चढाव और उतार के बारे में इस पूरे उपन्यास में लिखा गया है। उनके बचपन उनके विवाह और उनकी सारी समाजसेवा की कहानियाँ यहाँ बताई गई है।

RED COLORS ™

Scanned with CamScanner

कौसल्या बैसंत्री की परिचय

कौसल्या बैसंत्री का जन्म एक अस्पृश्य परिवार की महार जाति में 08-09-1926 में नागपुर की खलासी लाईन बस्ती में हुआ।

परिवार :- कौसल्या के परिवार में उसकी माँ ने पंद्रह बच्चों को जन्म दिया। पर उसमें से पाँच ही जीवित रहे और ज्यादातर लड़कियाँ ही थी। उनकी माँ का नाम भागीरथी और पिता का नाम रामा था। माता-पिता दोनो ही नौकरी करते थे। कौसल्या अपनी माँ से बहुत प्रभावित थी। अपनी बच्चों को अच्छी पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने अच्छे संस्कार भी दिए। माँ को समाज के लोगों में आना जाना और अच्छी बातों को सीखने की इच्छा थी।

बचपन :- कौसल्या बैसंत्री का बचपन बहुत सी गरीबी और आर्थिक विपन्नवस्था में बीता। घर में भाई बहनों की बढ़ती फौज ने उनका पूरा जीवन ही अस्तव्यस्त कर दिया था। माँ-बाप दोनो ही नौकरी करते थे, इसी करण छोटी बहनों की जिम्मेदारी कौसल्या पर रहती थी और वह उसे पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाती थी। माँ के साथ सब बहनें मिलकर घर को साफ-सुथरा रखती थी। लेकिन घर के बाहर का परिवेश एकदम अलग था। गंदगी और दुर्गंधी भरे महौल में उन्हें साँस लेनी पड़ती थी।

शिक्षा :- बचपन से ही कौसल्या की शिक्षा के प्रति लगाव था और उसी कारण वह बहर साल प्रत्येक कक्षा में आगे बढ़ती गई। जाई-बाई की स्कूल में तीसरी तक की शिक्षा लेने के बाद मिडे हाईस्कूल में ही उन्होंने पाँचवी के लिए प्रवेश लिया और वहीं से मैट्रीक पास हो गई। उन्हें स्कूल में शिक्षा कम और काम ज्यादा करना पड़ता था। स्कूल जीवन से ही उनके मन में सामाजिक कार्य के प्रति लगाव था। और इसी कारण अस्पृश्य समाज से संबंधित संस्थाओं से वे जुडी गई और सक्रिय सहयोग देने लगी।

सामाजिक कार्य :- कौसल्या जी को बचपन से ही सामाजिक उनकी माँ में से उन्हें प्राप्त हुआ था। प्रति लगाव था यह गुण उनकी माँ मे उन्हें प्राप्त हुआ था। उनके समाज के विद्यार्थियों की शैक्षणिक समस्याओं के बारे मे सोच-विचार और मार्गदर्शन करने के लिए अस्पृश्य विद्यार्थी परिषद बनाई गई थी उसकी उपसचिव कौसल्या जी थी। नागपुर मे सन् 1943 मे अस्पृश्य विद्यार्थी परिषद का प्रांतीय अधिवेशन हुआ था उसमें भी कौसल्या जी सक्रीय थी। कौसल्या जी सी. पी और बरार शेड्यूल कास्ट स्टुडेंट फेडरेशन की ज्वाइंट सेक्रेटरी के रूप में काम करने लगी। सन 1945 में नागपुर में ऑल इंडिया शेड्यूल कास्ट स्टुडेंट फेडरेशन का अधिवेशन हुआ। उस अधिवेशन के लिए अन्य प्रांतों से अनेक विद्यार्थी आए थे। इनमें से एक थे देवेंद्र कुमार बैसन्त्री जिनके साथ आगे चलकर कौसल्या जी की शादी हुई।

Page No.: Date :

विवाह :- कौसल्या जी का विवाह देवेंद्र कुमार बैसंत्री के साथ 16 नवबंर 1947 को रजिस्ट्रार के सामने हुआ देवेंद्र कुमार एम. ए एल एल बी करके डी लिट कर रहे थे। देवेंद्र कुमार को पत्नी सिर्फ खाना बनाने और उसकी शारिरिक भूख मिटाने के लिए चाहिए थी। वह बात-बात पर कौसल्या जी को ताने देता था। उसे स्वतंत्रता सेनानी का ताम्रपत्र मिला था। लेकिन घर में अपनी पत्नी को दासी बनाकर रखता था। अंत में कौसल्या जी उनके अलग हो गई और कोर्ट में मुकदमा दायर किया। इस तरह उनका विवाहित जीवन असफल रहा।

साहसी और सत्यप्रिय :- कौसल्या बैसंत्री महान जाति बहुत सारे जातीय द्वेश झेलने पड़े थे। लेकिन इन सबको सहते हुए वे आगे बढ़ी। कोई छोटा-छोटा बड़ा व्यक्ति नाम या जाति पूछे तो बेहिचक वह बताती इसके सुननेवालों की नजरो में उनके बारे में तिरस्कार, नफरत, अपमान व इज्जती आदि की भावना बढ़ाती थी। पर कभी उन्होंने अपनी जात को छिपाया नही।

अंधश्रद्धा के विरोधी :- भारतीय लोग ज्यादा तर जाति में और देहातो मे इसकी मात्रा ज्यादा दिखाई देती है। दवा-दारु के लिए डाक्टर के पास जाने की अपेक्षा ये लोग ढोंगी हकीम बाबा लोगो के पास जाते हैं। लोग भूत प्रेतो पर ज्यादा विश्वास रखते थे। पूजा के लिए पशु पक्षीयोंकि बलि भी दी जाती थी। कौसल्या जब भोपाल में रहती थी तब उनके पड़ोस के घर में साँप निकला था। उनके अज्ञान पर कौसल्या जी को आश्चर्य होता है।

Scanned with CamScanner

Page No.: Date :

आत्मकथा का स्वरूप

वटवृक्ष की भाँति साहित्य का क्षेत्र दिन प्रतिदिन विस्तृत होता जा रहा है। साहित्य रूपी यह वटवृक्ष मानव जीवन से परिपोषित होकर दिन-ब-दिन अनेक नवीन रूपों में पल्लवित हो रहा है। 19 वी शताब्दी के अंत तक हिंदी साहित्य कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक निबंध आदि विधाओं तक ही सीमित थी। परंतु 20 वी शताब्दी में इन परंपरागत विधाओं के साथ साथ अनेक नई विधाओं का भी प्रादुर्भाव हुआ। साहित्य की इन नवीन विधाओं में आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र पत्रसाहित्य आदि विधाएँ प्रमुख है। इन नई विधाओं ने भी हिंदी साहित्य में अपना स्वतंत्र स्थान बना लिया और इनके द्वारा हिंदी साहित्य भी समृद्ध हुआ है। इन सब में आत्मकथा का अपना स्वतंत्र स्थान है।

वैसे देखा जाए तो आत्मकथा जीवन की साक्षात् प्रतिछाया ही नहीं वरन् जीवन का एक सजीव आत्मांकन भी है। वह सत्य को पथ प्रदर्शक और ऊरु तथा कल्पना को अनुचरी बनाकर आगे बढ़ती है। आत्मकथा रचनाकार के आत्म परिष्कार का माध्यम है। उसमें रचनाकार के भोगें हुए सुख-दुख का वास्तविक चित्रण होता है। अत: आत्मकथा का मूल बीज व्यक्ति-विशेष ही है। वही व्यक्ती-विशेष अर्थात रचनाकार ही आत्मकथा का कर्ता, भोक्ता एवं आख्यात भी है।

RED COLORS ™

Scanned with CamScanner

Page No.: Date :

आत्मकथा में प्रामाणिकता का बोध, डायरी की अपेक्षा कुछ कम होकर भी हृदय-ग्राहिता, प्रभावपूर्णता, समानुभूति व संवेदनशीलता का परिणाम कुछ अधिक बढ़ जाता है। इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि डायरी और आत्मकथा दोनों विधाएँ पूर्णतया तथ्याश्रित, आत्मपरक तथा आत्मप्रकाशन की भावना से संयुक्त है। दोनों ही विधाएँ लेखक की व्यक्तिगत अभिरुचि, सामर्थ्य और विश्लेषण शक्ति की विशिष्ट परिचायक है। डायरी लेखन आदि करने के लघु जीवन के क्षण बोध का प्रतीक है तो आत्मकथा नदी की धारा की अनवरत जीवन प्रक्रिया की प्रतिकृति है।

डायरी मे घटनाओं के चुनाव का कोई महत्व नहीं, आत्मकथा में चुनाव और संपादन है। और संपादन है। और वह महत्वपूर्ण है। डायरी में तिथियों की प्रधानता है, आत्मकथा में तथ्यों की। डायरी इतिहास एवं जीवनी आदि का साधन रूप है आत्मकथा स्वयं साध्य है। अतः दोनो विधाएँ लेखक द्वारा अपने विषय में स्वयं लिखित होने पर भी सर्वथा भिन्न है। डायरी के अनुभवों में कोई सिलसिला नहीं रहता, जबकि आत्मकथा में भोगे हुए अतीत की कहानी में क्रम बद्धता रहती है। जिस कारण पाठक को आत्मकथागत जीवनानुभवों में समरस होने के लिए कोई व्यायाम नहीं करना पड़ता।

Scanned with CamScanner

डायरी में भोगे हुए अतीत का पुनमूल्यांकिन एक दृष्टिकोण के आलोक में आ जाता है। एक सीमा तक डायरी का उपयोग आत्मकथाकार कर सकता है पर उसका सीमातीत प्रयोग आत्मकथा के लिए हानिकारक ही सिद्ध होगा। डायरी की अभिव्यक्ति पद्धति, उद्देश्य व आत्मकथा की अभिव्यक्ति पद्धति तथा उद्देश्यों में मेल नहीं है। अतः व्यापक जीवन बोध को डायरी अपनी सीमाओं के कारण प्रेषित नहीं कर सकती।

डायरी और आत्मकथा का न तो उद्देश्य समान होता है न प्रतिपादन शैली, न ही उनका प्रभाव एक दूसरे से मिलता है। डायरी का पाठक उसकी सत्यप्रित प्रामाणिकता के प्रति अपेक्षाकृत अधिक आश्वस्त तो रहता है; किंतु लेखक के संपूर्ण व्यक्तित्व से उसका साक्षात्कार एक साथ कभी नहीं हो पाता।

Scanned with CamScanner

दोहरा अभिशाप आत्मकथात्मक उपन्यास का मूल्यांकन

जीवन के एक विशिष्ट बिंदु पर पहुँचने पर लेखक आत्मकथा के बहाने अपने विगत जीवन का पुनरावलोकन करता है जब वह अतीत को फिर एक बार स्मरण करने या स्मृतियों के मध्य जीने की इच्छा का अनुभव करें तभी आत्मकथा की निर्मिती संभव है। परंतु डायरी समय के साथ चलती है, डायरी समय के साथ बढ़ती रहती है। भले ही वह अनुभवों को कितने ही सशक्त रूप में व्यक्त क्यों न करे पर वह दैनिक घटनाओं तथा समय विशेष की मानसिक दैनिक घटनाओं तथा समय स्थिति का ही विवेचन करती है। इसलिए उसमें किसी प्रकार की कृत्रिमता परिलक्षित नहीं होगी। आत्मनः विषये कथ्यते यस्या सा आत्मकथा अर्थात जहाँ अपने ही विषय में बात की जाए वही आत्मकथा है। आत्मकथा में रचनाकार की दृष्टि बाह्य संसार

Page No.: Date :

और अधिक अग्रसर रहती है। पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव के कारण हिंदी आत्मकथा का प्रचलन हुआ।

पाश्चात्य साहित्य में इस विधा के लिए 'ऑटो - बायोग्राफी' (Auto - biography) शब्द प्रचलित हुआ। इसका मतलब ऑटो अर्थात् आत्म और बायोग्राफी अर्थात जीवनी - आत्म जीवनी अथवा आत्म - चरित्र हुआ। परन्तु हिंदी मे ये शब्द अधिक प्रचलित नहीं है। वैसे तो हिंदी के आत्मकथा लेखकों ने आत्मकथा के लिए आत्मकथा, आत्म चरित्र, आपबीती, आत्मवृत्त, निजवृत्तांत, मेरी कहानी, अपनी कहानी, आत्मविश्लेषण आदि अनेक शब्दों का प्रयोग किया है। परन्तु हिंदी के कतिपय समीक्षकों और कोशकारों ने इस विधा के लिए आत्मकथा कहना ही अधिक उचित समझा है। इस दृष्टि से देखा जाए तो आत्मकथा का अंग्रेजी अनुवाद अर्थात् ऑटो फिक्शन या ऑटो स्टोरी हो सकता है; लेकिन ऑटो बायोग्राफी नहीं। अतः आत्मकथा लेखक का पहला फर्ज यह होता है कि वह अपने जीवन को समस्त दुर्बलता, औं गुणावगुणों कमजोरियाँ देश पाखंड आदि के साथ यथार्थ रूप मे उद्घाटित करे।

व्यक्ति के जीवन के दो पक्ष होते है कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष। जीवन के ये दो पक्ष अर्थात् कृष्ण पक्ष याने दुर्बलताओं और कमजोरियाँ तथा शुक्ल पक्ष याने शक्ति और तेजस्विता आत्मकथा के प्राण है।

RED COLORS TM
Scanned with CamScanner

जीवन के इन दो पक्षों को सावधानी प्रामाणिकता और ईमानदारी के साथ व्यक्त करना ही आत्मकथा है। अर्थात आत्मकथा यथार्थ जीवन की सत्यनीत कथा है आत्मकथा में आत्म प्रकाशन आत्मप्रेषण आत्मविश्लेषण और आत्मविवेचन की प्रक्रिया निरंतर चलती है। अतः आत्मकथा का विनियोग आत्मप्रेषण के साथ - साथ आत्मविकास के लिए भी होता है।

इस प्रकार आत्मकथा की रचना - प्रक्रिया के प्रारंभ में ही अनेक विघ्न - बाधाएँ उत्पन्न होती है और रचनाकार की आत्माभिव्यक्ति के पथ में अवरोध उत्पन्न करती है। फिर भी मन की कसमसाहट, आंतरिक संवेदनाएँ खुद की रचनाकार की आत्माभिव्यक्ति का मार्ग प्रशस्त कर देती है।

निष्कर्ष

इस प्रोजेक्ट को करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर आए कि प्रत्येक साहित्यकार का अपने कृति के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है। अगर उस रचना का कोई भी उद्देश्य न हो तो वह निरुद्देश्य रचना साहित्य कहलाने के काबिल नहीं होती। खासकर आत्मकथा लिखने का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है पहले बड़े राजकीय नेताओं की आत्मकथाएँ लिखी जाती थी। कौसल्या बैसंत्री के जीवन की प्रमुख कहानीयाँ - घटनाएँ यहाँ इस प्रोजेक्ट मे लिखी हुई है। यह सब इस प्रोजेक्ट में निष्कर्ष निकलता है।

Seen